# भारतीय क्रिकेट का इतिहास और विश्वकप - 1999

श्री नीलाभ कुमार द्विवेदी
कक्षा - 10

**भारतीय क्रिकेट का इतिहास**

यों तो भारत का राष्ट्रीय खेल कबड्डी है परन्तु हॉकी और क्रिकेट यहां बहुतायत से खेला जाता है । बीसवीं सदी के आरम्भ में हाकी का बहुत ही बोलबाला रहा, परन्तु इस सदी का अंत क्रिकेट की लोकप्रियता को जाता है । इस खेल की लोकप्रियता के पीछे हमारे उन पूर्वजों का लगन और प्यार छिपा है जिनकी प्रेरण और कर्तव्यनिष्ठा द्वारा हम इस खेल के ब्रिटिश अधिकार को चुनौती देने में कामयाब हो सके । यही कारण है कि विश्व कप को विगत में एक बार जीतकर विजय-पताका फहरा चुके हैं । इस प्रकरण में कई अन्य रोचक प्रसंग चुड़े हुए हैं । आइए जरा इससे जुड़े इतिहास को देखें ।

अंग्रेजों द्वारा वर्ष 1784 ई. में ईस्ट-इंडिया कम्पनी पर अधिकार जमाने के पश्चात भारत को 1947 ई. में आजादी मिलने तक गुलामी का मूंह देखना पड़ा । इस अवधि में हम ज्यादा कुछ नहीं कर सके । भारत के लिये यह काल अंधेरे का काल कहा जा सकता है । भारत में क्रिकेट का खेल बहुत पुराना है । कहते हैं कि सबसे पहले यह खेल सन 1721 ई० में जब अंग्रेजों का नामोंनिशान भी नहीं था, कैम्बे नामक स्थान जो आज कलकत्ता का ईडेन-गार्डेन है, में ब्यापारी नाविकों द्वारा खेला गया था । कलकत्ता क्रिकेट क्लब का अभ्युदय सन 1792 में हो सका था । पांच साल बाद फिर बाम्बे में खेला गया । आज बाम्बे को हम क्रिकेट का घर कहते हैं । अठारहवी सदी के अंत तथा सन 1848 ई. में पारसियों ओल्ड एटोनियम द्वारा ओरियेन्ट क्लब बनाकर खेलने का जिक्र आता है । वर्ष 1886 ई. में इन्हीं पारसियों ने इंग्लैण्ड में 28 में से एक मैच जीतकर तहलका मचाया था । फलस्वरूप ठीक तीन वर्षो बाद वहां की टीम 'लार्ड हाक' के नेतृत्व में भारत और श्रीलंका का भ्रमण की । सन 1828 में इण्डियन क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड की स्थापना हुई और सन 1932 ई. में इस बोर्ड के तहत पहला मैच लार्ड के मैदान में खेला गया, जो कालान्तर में 'रन्जी ट्राफी ' के नाम से विख्यात हुआ और भारत के खेल प्रेमियों के लिये इस खेल के प्रति उत्सुकता और झुकाव का कारण बना । इस ट्राफी का नामकरण नवानगर के प्रतापी महाराजा श्री एच एच रनजीत सिंह जी साहिब के सम्मान में हुआ था, जिन्होंने सन 1896 ई. से 1906 ई. तक सुसेक्स के कैम्ब्रिज में इस खेल द्वारा अतिशय प्रसिद्धी अर्जित की थी । हालांकि, उन्होंने भारत के नाम से इसे कभी नहीं खेला था । इसके पश्चात इस खेल को भारत में जिन्दा रखने में महाराजा रणजीत सिंह के भतीजे श्री दलीप सिंह और पटौदी के दो नवाबों को जाता है जिन्होंने लगभग 70 वर्षो तक इसे गौर्वान्वित किया । पहले नवाब ने तो भारत के साथ साथ इंग्लैण्ड की ओर से खेलते रहे तथा इंग्लैण्ड की धरती पर वर्ष 1946 ई. में भारत के कैप्टन के रूप में उभरे । उनके पुत्र ने भी उनका अनुसरण करते हुए अपनी ओक्स्फोर्ड में अध्ययन के दौरान खेलते रहे । छोटे नवाब साहब जी

21 वर्ष की उम्र में सन 1961 ई. में भारत की कैप्टनशिप ली जिसका उन्होंने 1969 ई. तक बरकरार रखा ।

इसके पश्चात सुनील गावास्कर का आंधी तूफान की तरह पदार्पण हुआ । श्री गावस्कर पहले टेस्ट मैच की प्रथम पारी वेस्टइन्डीज से खेलते हुए अपने नाम 774 के कुल स्कोर के साथ 200 रनों के योगदान के साथ एक शतक दर्ज किया । इसमें इनकी हाथ की उंगली जख्मी हो गयी थी फिर भी औसत 154.4 का रहा । लिटिल मास्टर श्री गावस्कर अपने पूरे क्रिकेट जीवन में 125 टेस्ट मैच खेले तथा 10,122 रनों का विश्व कीर्तिमान स्थापित किया जिसमें 34 शतकों का योगदान है और इस प्रकार विश्व क्रिकेट सम्राट के रूप में शोभायमान हुए । जब गावस्कर अपने खेल को अन्तिम विदाई देने के लिए सोच ही रहे थे सचिन तेन्दुल्कर नाम के 15 वर्षीय एक और रणबाकुर बालक के पदार्पण की तैयारी चल रही थी । जरा ध्यान दीजिए यह अनोखा बालक मात्र 2 वर्ष का था, जब प्रथम विश्व कप का खेल खेला जा रहा था; और मात्र 10 वर्ष का जब क्रिकेट के धुरन्धर श्री कपिलदेव का क्रिकेट जगत में पदार्पण हुआ । कपिलदेव के नेतृत्व में खेलते हुए भारत सन 1983 में इसी लार्ड के मैदान में सात मैचों में पांच हारने के उपरान्त भी विश्व-कप हासिल करने में कामयाब रहा । कटक में केनिया के विरूद्ध खेलते हुए इन्होंने 127 रनों का जोरदार योगदान दिया । कपिलदेव के साथ कई बार अच्छे स्कोर पर रन आउट होने की अनेको घटनायें जुड़ी हुई हैं । कलकत्ता में श्रीलंका के विरूद्ध खेलते हुए इन्हें अपमान भी झेलना पड़ा जब विरोधी टीम ने भारत को 8 विकेटो पर मात्र 120 रनों के स्कोर पर आउट कर दिया था । इसके बाद अजहरूद्दीन का आगमन हुआ और इस सदी के अंत के अंतिम विश्व कप में इन्होंने ही भारत का नेतृत्व किया ।

**विश्व-कप 1999**

इग्लैण्ड के ऐतिहासिक लाड्र्स मैदान में आस्ट्रेलिया ने बाद में खेलते हुए विश्व चैंपियन होने का गौरव प्राप्त किया । वह यह कारनामा अंजाम देने वाली दूसरी टीम है । इससे पहले यह कारनामा श्रीलंका की टीम ने अंजाम दिया था । श्रीलंका ने आस्ट्रेलिया को हराकर 1996 में विश्व कप जीता था ।

इस बार भारत का मैच तमाम आलोचनाओं का शिकार हुआ । अजहर की बहुत आलोचनाए हुईं । इसके बावजूद अजहर अपनी गलती मानने के लिए तैयार नहीं है पर उन्हें यह मानना होगा कि विश्व कप में एक कप्तान के रूप में वे न तो अपने निर्णयों से और न ही बल्ले से कुछ भी गौरवशाली लिख सके । सिवाय पाकिस्तान के साथ हुये एक मैच में जिसमें वे इन दोनों भूमिकाओं में देश के जज्बे की रक्षा करने में कामयाब रहे । लेकिन सिर्फ इसी एक पारी के कारण देश की जनता उनके उन तमाम गुनाहों को भूलना पसन्द नहीं करेगी जो भारत के सेमी-फाइनल में न पहुंचने के ठोस कारण रहे । एक कप्तान के नाते अजहर को टीम के हित में मनमाफिक निर्णय लेने की तो छूट थी, किन्तु पूर्व निर्धरित रणनीति बदलने की नही, पर आस्ट्रेलिया के साथ हुये मैच में उन्होंने टीम मैनेजर और कोच बाबी सिम्पसन राय के प्रतिकूल निर्णय लिया । परिणाम यह हुआ कि विश्वकप उनके हाथों से उसी तरह दूर हो गया जैसे कि एक विज्ञापन में उनके सामने एक दर्शक

कप लेकर चलता बनता है और वे टापते रह जाते हैं। अजहर सहित किसी भी खिलाड़ी को यह नहीं भूलना चाहिए कि विभिन्न कंपनियां यह जो लाखो करोड़ों रूपये उन पर न्योछावर करती है, उसकी भरपायी करने वाली जेबे इन कंपनियों की न होकर देश की करोड़ों करोड़ जनता की होती हैं। इन जेबों के लिये वे क्या लाए ? मायूसी ही न। एक कप्तान के रूप में अजहर अपने आपको क्रोनिए स्टीव वा या अकरम के साथ पलड़े पर बिल्कुल भी नहीं रख सकते। अभी घरेलू प्रतियोगिताओं के प्रदर्शन के आधार, खिलाड़ियों के चयन की जो पद्धति चल रही है उसका पुनरावलोकन आवश्यक है। खिलाड़ियों का मुख्य लक्ष्य क्रिकेट होना चाहिए न कि व्यक्तिगत प्रदर्शन। अच्छे प्रदर्शन न करने वाले खिलाड़ियों को आनन फानन बाहर का रास्ता दिखाने में किसी को भी कोई संकोच नहीं होना चाहिए। खिलाड़ियों के दिलों दिमाग पर यह छाप स्पष्ट होनी चाहिए कि उनका सिर्फ एक गैर जिम्मेदाराना प्रदर्शन उन्हें गुमनामी में ढकेल देने के लिए पर्याप्त है। चयन समिति के पास हर क्रम के कम से कम दो खिलाड़ी हमेशा तैयार रहने चाहिए यानी हर क्रम का विकल्प होना चाहिए। कप्तान के बाद विकेट रक्षक की जो रिक्ति उभर कर सामने आयी है उसका विकल्प भी अब तैयार करना ही होगा। जिसकेलिये राहुल द्रविण के नाम पर भी विचार किया जा सकता है।

**विश्व कप किर्तिमानों की झलक**

इस विश्व कप में पहले राउंड की तरह सुपर सिक्स, सेमीफाइनल और फाइनल में कई नये रिकार्ड बने। फाइनल मैच में मार्क वां विश्व कप में 1000 रन बनाने वाले चौथे खिलाड़ी बने। उन्होंने 22 वां मैच खेलते हुए यह मील का पत्थर स्थापित किया। इस विश्व कप से पहले यह रिकार्ड पाकिस्तान के जावेद मियांदाद और वेस्टइंडीज के डेसमंड हेंस विश्व कप में 1,000 रन बनाकर यह कारनामा अंजाम दे चुके हैं। भारत के सचिन तेंदुलकर ने इसी विश्व कप में पाकिस्तान के खिलाफ मैच में अपने 1000 रन पूरे किए थे। वह इसी पारी के दौरान वनडे मैच में अपने 8,000 रन बनाने में सफल हुए। वह यह कारनामा अंजाम देने वाले चौथे खिलाड़ी बने।

जैफ एलाट ने 20 विकेट प्राप्त करके एक विश्व कप में सबसे अधिक विकेट लेने का रिकार्ड प्राप्त किया, जिसे फाइनल में आस्ट्रेलिया के शेन वार्न ने बराबर कर दिया। शेन वार्न फाइनल में अपने 200 विकेट भी प्राप्त करने में सफल हुए। उनके 200 वें शिकार वसीम अकरम थे। उन्होंने 25 वें मैच में यह कारनामा अंजाम दिया। फाइनल मैच स्टीव वॉ का 33 वां मैच था। स्टीव वॉ ने यह मैच खेलने के बाद जावेद मियांदाद का विश्व कप में सबसे ज्यादा मैच खेलने का रिकार्ड भी बराबर कर दिया। सेमीफाइनल में न्यूजीलैण्ड की पारी में और फाइनल में पाकिस्तान की पारी में अतिरिक्त रन उंचा स्कोर रहे। विश्व कप के किसी मैच में यह छठा मौका था जब अतिरिक्त रन उंचा स्कोर पर रहे हों। दक्षिण अफ्रीका और आस्ट्रेलिया के बीच खेला गया दूसरा सेमीफाइनल मैच टाई हुआ। विश्व कप में टाई होने वाला यह पहला मैच था, जबकि वन-डे मैचों में टाई होने वाला यह 15 वां मैच था।

जिम्बाब्वे के विरूद्ध सुपर सिक्स मैच में पाकिस्तान के सकलेन मुश्ताक हैट्रिक करने में सफल हुए। वह विश्व कप में हैट्रिक करने वाले दूसरे बालर बन गए। सकलेन मुश्ताक की यह

दूसरी हैट्रिक थी । वह वन-डे मैचों मे दो हैट्रिक करने वाले वसीम अकरम के बाद दूसरे खिलाड़ी थे । सकलेन मुश्ताक की हैट्रिक की वजह से जिम्बाब्वे की टीम 123 रन बनाकर आउट हो गयी थी । जो विश्व कप में उसका सबसे कम स्कोर है । दक्षिण अफ्रीका के विरूद्ध सकलेन मुश्ताक वन-डे मैचों में 200 विकेट लेने में भी सफल हुए । उन्होंने अपना 1[illegible] वां वन-डे मैच खेलते हुए यह सम्मान प्राप्त किया । उन्होंने सबसे कम मैचों में 200 विकेट लेने का रिकार्ड बनाया है ।

आज क्रिकेट की किताब में वह भी खसकर एक दिनो मैचों में पुछल्ले बल्लेबाज जैसा कोई शब्द शेष नहीं रह गया है । यह टेस्ट क्रिकेट का शब्द है और शनै शनै वहां से भी लुप्त हो रहा है । पुराने टेस्ट मैचों की तरह आज कोई टीम केवल छइ-सात बल्लेबाज व केवल चार गेंदबाजों के बल पर मैदान पर उतरने का दुस्साहस नहीं करती । भारत को छोड़कर संभावित विजेता मानी जा रही भी टीमों में कम से कम दस बल्लेबाज और कम से कम 7 गेंदबाज तो थे ही । यानी हर टीम में कम से कम आधे खिलाड़ी ठोस बल्लेबाज भी थे, भरोसेमंद गेंदबाज भी और कुशल क्षेत्ररक्षक भी । फाइनल में पाकिस्तान की रीढ़ तोड़ने वाले उंगलियों के जादूगर शेन वार्न ने अपने बल्ले के जौहर भी दिखाये थे, लेकिन कांउटी में शतक ठोकने का इतिहास बनाने वाले पहले भारतीय शुद्ध गेंदबाज कुम्बले ने आठ पारियों में क्या एक भी पारी अपनी ऐसी खेली जिसके लिये देश की जनता उन्हें एक बार फिर याद कर ले, यही सवाल जवागल श्रीनाथ व प्रसाद से भी है ।

एक दो पारियों का अच्छा प्रदर्शन इतिहास नहीं बना करता, ठीक उसी तरह जैसे एकाध पराजय विश्व विजेताओं के मार्ग का कण्टक नहीं बनती । पाकिस्तान, दक्षिण अफ्रीका और आस्ट्रेलिया तीनों इसका जीता जागता सबूत रहे, अतः आज जहां एक प्रेरणादायक नेतृत्व का प्रश्न अहम है वहीं आलराउण्डर माने जाने वाले भारतीय गेंदबाजों की स्लाग आवेरो में लचर बल्लेबाजी भी कम जलता हुआ सवाल नहीं है । इतना ही नहीं, इंजीनियर जैसा ओपनर विकेट कीपर देने वाले देश को एक नये इंजीनियर की तलाश भी करनी है और मैदान पर ग्यारह सोलकर, ब्रजेश पटेल और पटौदी भी पैदा करने है जो चीते की चपलता से क्षेत्ररक्षण कर सके । अजहर खुद एक चपल क्षेत्ररक्षक थे, किन्तु अब क्षेत्ररक्षण में भी उनकी वह पकड़ नहीं रह गयी है जो कभी प्रेरण बना करती थी । ये सभी प्रश्न समुचित उत्तर तभी बनेंगे जब देश का क्रिकेट बोर्ड पक्षपात व पूर्वाग्रहों से ऊपर उठकर अमय खुरसिया जैसे नौजवानों को महज पर्यटक न बनाए । यह शुरूआत सबसे पहले नये कप्तान के चयन से होगी, जिसके लिए दो नाम ही शिखर पर हैं -अजय जडेजा और मास्टर ब्लास्टर सचिन तेन्दुलकर । एक दिवसी मैचों की कप्तानी में अजय जडेजा जिस तरह दल में प्राण फूंकने में कामयाब रहे और तनाव के क्षणों में भी उनके चेहरे पर जैसा आत्मविश्वास झलकता रहा उससे कप्तान के रूप में उनके अलावा आज कोई दूसरा नाम नहीं दिखता, लेकिन जहां तक टेस्ट मैचों का प्रश्न है उन्हें अपने आपको अभी सिद्ध करना है । उनका टेम्परामेंट एकदिनो ही वाला है इसलिये विश्व कप विजेताओं के देश अर्थात आस्ट्रेलिया का इतिहास शयद भारत को भी दोहराना पड़े और एक दिनी व पांच दिन क्रिकेट के लिये अलग-अलग मिजाज के कप्तान खोजने पड़े । एक दिनी संभावित कप्तान अजय जडेजा से बेहतर जो नाम उभरता है वह निसंदेह सचिन ही है । तेन्दुलकर से बेहतर टेस्ट कप्तान मौजूदा समय में और कौन हो सकता है ?

अगर भविष्य में क्रिकेट के पृष्ठों पर कुछ सार्थक लिखना है तो भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड के समक्ष इन दोनो के अतिरिक्त कोई दूसरा विकल्प है ही नही और शायद यही देश की जनता का निष्पक्ष चयन भी है। ये सारी प्रक्रियाएं सही-सही तब संपन्न होगीं जब हमारी क्रिकेट प्रबन्धन समिति का गठन भी व्यावहारिक होगा। प्रबन्धन समिति के सदस्यों के चयन की कोई राष्ट्रीय नीति होनी चाहिए। प्रबन्धन समिति में ऐसे निष्पक्ष लोग होने चाहिए जो न केवल क्षेत्रीयता और राजनैतिक सोच से ऊपर उठकर चयन कर सकें, बल्कि कुशल रणनीतिज्ञ भी बनाए।

राहुल द्रविड़ ने पहले राउंड में लगातार दो मैचों में दो शतक बनाए। सईद अनवर ने यह कारनामा सुपर सिक्स में अंजाम दिया। उन्होंने पहले जिम्बाब्वे के विरूद्ध और बाद में न्यूजीलैण्ड के विरूद्ध शतक बनाए। इससे पहले विश्व कप में किसी भी ख्लाड़ी ने लगातार दो मैचों में दो सेंचुरियां नही बनाई।

जिम्बाब्वे के विरूद्ध लाड्र्स में खेले गये मैंच में मार्क वां ने 120 गेंदो पर 13 चौकों की मदद से 104 रन बनाए जो विश्व कप में उनकी चौथी सेंचुरी थी। वह यह सेंचुरी बनाने के बाद विश्व कप में सबसे ज्यादा सेंचुरी बनाने वाले खिलाड़ी भभ् बन गए। इससे पहले यह रिकार्ड पाकिस्तान के रमीज राजा, वेस्टइंडीज के विवयन रिचर्डस और भारत के सचिन तेंदुलकर के पास था। तीनों ख्लाड़ियों ने तीन तीन सेंचुरियां बनाई हैं। मैनचेस्टर में खेले गये सुपर सिक्स मैच में पाकिस्तान के विरूद्ध अजहरूद्दीन ने 59 रन बनाए जो वन-डे मैचो में उसकी 57 वीं हाफ सेंचुरी थी। यह हाफ सेंचुरी बना करके वन-डे मैचों मे सबसे ज्यादा हाफ सेंचुरी बनाने का डेसमंड हेंस का रिकार्ड बराबर करने में सफल हुए। डेसमंड हेंस ने 238 मैचों में 57 हाफ सेंचुरियां स्कोर की थी, जबकि अजहर ने 321 मैचों में इतनी ही हाफ सेंचुरियां बनाई हैं। अजहरूद्दीन की विश्व कप में यह आठवीं हाफ सेंचुरी थी। अब वह विश्व कप में सबसे ज्यादा हाफ सेंचुरी बनाने वाले खिलाड़ियों में शामिल हो गए हैं। इससे पहले न्यूजीलैण्ड के मार्टिन क्रो, पाकिस्तान के जावेद मियांदाद और इंग्लैण्ड के ग्राहम गूच ने आठ-आठ हाफ संचुरियां बनाई थी।

नील जॉनसन ने आस्ट्रेलिया .के विरूद्ध मैच में जिम्बाब्वे की ओर से पारी की शुरूआत की और वह अंत तक नाट आउट रहे। विश्व कप में पारी की शुरूआत से अंत तक नाट आउट रहने वाले वह जिम्बाब्वे के दूसरे और कुल मिलाकर आठवें खिलाड़ी बने। उन्हें यह कारनामा दिखाने पर मैन आफ दि मैच एवार्ड से सम्मानित किया गया। विश्व कप में ऐसा बहुत कम हुआ जब हारने वाली टीम के खिलाड़ी को मैन आफ द मैच एवार्ड दिया गया हो।

दक्षिण अफ्रीका की टीम दूसरी बार अजीबो गरीब अंदाज में टूर्नामेंट से बाहर हुई। 1992 में वह पहली बार सेमीफाइनल में पहुँची थी, पर बारिश की वजह से मैच रूक गया और उसे एक बाल पर 21 रन बनाने का नामुमकिन टारगेट दिया गया। इस बार इसका सेमीफाइनल टाई गया और सुपर सिक्स में आस्ट्रेलिया से हारने की वहज से वह सेमीफाइनल से बाहर हो गयी।

**भारत विश्व कप सारांश**

1975 : इग्लैण्ड में खेलने की सुरूआत और हारा । अफ्रिका से जीता और न्यूजीलैण्ड से हारा । इस प्रकार से कए जीता और दो हारा ।

1979 : वेस्ट इन्डीज, श्री लंका और न्यूजीलैण्ड से खेले गये तीनों मैच हारे ।

1983 : वेस्ट इण्डीज और जिम्बाम्बे से जीता परन्तु आस्ट्रेलिया से हारा । सेमी-फाइनल में इग्लैण्ड से जीता तथा फाइनल वेस्ट इंडीज से जीता । इस प्रकार 8 मैच खेले जिनमें से ६ जीते ।

1987 : आस्ट्रेलिया से एक बार जीता और एक बार हारा न्यूजीलैण्ड तथा जिम्बाम्बे से जीता। सेमी-फाइनल में इंग्लैण्ड के विरूद्ध हारा सात मैच खेले पांच जीते ।

1982 : इंग्लैण्ड न्यूजीलैण्ड साउथ अफ्रिका और आस्ट्रेलिया से हारते हुए भी कुल आठ मैच खेले जिसमें दो मैच जिम्बाम्बे और पाकिस्तान से जीत दर्ज की ।

1996 : केनिया और वेस्ट इण्डीज आस्ट्रेलिया जिम्बाम्बे से जीता लंका से हारा । स्वार्टर फाइनल में पाकिस्तान से जीता तथा फाइनल श्री लंका के विरूद्ध खेलते हुए हारा।

*इस प्रकार इंडिया (भारत ) ने कुल 36 मैच खेले जिसमें 18 में सफलता हासिल की ।*

***